मलयालम लेखिका कमला सुरैया की कहानियों में मातृत्व की झलक

डॉ. सनोज पी.आर
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
सेंट जोसफ कॉलेज देवगिरी कालीकट - केरल

आज से चार दशक पहले इस विषय पर निर्भीकता के साथ अकेले कलम और अक्षर को औजार बनाकर जूझने वाली लेखिका है मलयालम की कमला सुरैया। कमला सुरैया का अपना एक अलग ही साहित्य संस्कार था जिसे वह नैतिक मूल्यों से आबद्ध रखना चाहती थी। यह वह समय था जब लेखिकाएँ नैतिक मूल्यों को जीवन का आधार मानकर रचना कर्म में लीन रहती थीं। सीमाओं को तोड़ने का जुनून रखने वाली कमला सुरैया के विचार अन्य लेखिकाओं से भिन्न थे 'मेरी कथा' (My story) में उन्होंने लिखा है समाज के द्वारा बनाए नैतिक मूल्यों को नकारने के कई कारण हैं। इन लौकिक मूल्यों को बनाने वाला मनुष्य है। मनुष्य स्वयं नश्वर है तो उसके द्वारा निर्मित मूल्यों का क्या आधार है। समाजशास्त्र की दृष्टि से ऐसा एक विचार समाज में व्याप्त है कि साहित्यिक रचना किसी वैज्ञानिक शोध से कम नहीं है क्योंकि वह नए संस्कार को जन्म देती है। कमला सुरैया द्वारा निर्मित नए साहित्यिक संस्कार का साहित्यिक मंच पर क्या प्रभाव पड़ सकता है यह सोचने की बात है।

कमला सुरैया (कमला दास) के रचना व्यक्तित्व से परिचित होने के बाद भी उनके सर्जक व्यक्तित्व को परखा जा सकता है। लेखिका का घरेलू माहौल पूर्णतः साहित्यिक था। माँ बालामणि अम्मा की कविताएँ और नालाप्पाटु नारायण मेनोन से प्राप्त साहित्यिक ऊर्जा कमला सुरैया के सर्जक व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि रही है। 14 साल की आयु से कमला सुरैया के स्वछन्द विचारों से स्पष्ट होता है कि वे किसी विचारधारा से प्रेरित होकर नहीं लिखतीं। लेखन के बारे में उन्होंने कहा है "मेरे लिए लेखन एक व्रत है, एक यज्ञ है। मेरा लेखन वर्तमान की नई पीढ़ी के लिए नहीं है बल्कि कल के लोगों के लिए है।" अर्थात् भविष्य के लिए एक पैतृक सम्पत्ति के समान सुरक्षित रहेगा। वरजीनियाँ वुल्फ ने भी अपनी किताब 'Room of One's Own' में यही बात लिखी है कि वे वर्तमान पीढ़ी के द्वारा:भविष्य में आने वाली पीढ़ी के साथ संवाद स्थापित कर रही है। अर्थात् रचनाकार का रचनात्मक तत्व भविष्य के लिए एक विरासत होनी चाहिए।

जीवन में अनुभवों की सीमाओं का संकट कमला सुरैया के सामने नहीं है।" मलयालम में उनकी कई श्रेष्ठ रचनाएँ हैं जो अपने नए प्रयोग और नूतन विषय वस्तु के कारण विख्यात हैं। उनकी रचनाधर्मिता किसी सीमित दायरे में सिकुड़ने वाली नहीं है और न ही किसी प्रकार के परंपरागत नियम व्यवस्था से जुड़ने वाली है। रचना धर्म के प्रति उनका अपना एक 'विज़न' है। वे मानती हैं कि रचनाकार नियमों, पाठकीय माँगों, आलोचना के सैद्धांतिक तत्वों के आधार पर लेखन कार्य नहीं कर सकते। ऐसा करना साहित्य की प्रकृति के विरुद्ध है। वैयक्तिक स्वतंत्रता के समान ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी कमला सुरैया हर एक लेखक के लिए अभिव्यक्ति की स्वाधीनता को अनिवार्य मानती हैं। रचनाकार नई-नई रचनाओं का सृजन इसलिए करता है क्योंकि वह अपने आपको व्यक्त करना चाहता है। सृजन प्रक्रिया के प्रति हिन्दी की मशहूर लेखिका मृदुला गर्ग का भी यही विचार हैं

कमला सुरैया की कहानियों में मातृत्व की झलक -प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में स्त्री के मातृत्व भाव का महत्वपूर्ण स्थान है। स्त्री का यह स्वरूप असीम त्याग, सेवा भाव, अनुकंपा, अपार श्रद्धा, सहनशीलता परिपूर्ण है। भारतीय संदर्भ में 'स्त्री' पहले माँ है बाद में पत्नी। भारत वर्ष में स्त्री का ममतामयी रूप ही पूजनीय है जबकि पाश्चात्य देशों में स्त्री पहले प्रेयसी व पत्नी है बाद में माँ है। माँ के रूप में वह पूजित नहीं है। पत्नी और प्रेयसी के रूप में वह भोग्य पहले है, जिसे पुरुष को आकर्षित करने के लिए अपने शरीर पर अत्याचार कर उसे सजाना-संवारना पड़ता है। "प्रेयसी भावना में स्वच्छंद प्रेम की भावना अन्तर्निहित रहती है, उसमें एक प्रकार से जीवन की एक अतृप्त वासना की अभिव्यक्ति होती है। इसके विपरीत पत्नी एक संसकारबद्ध रूप है जिसके पगों में कर्तव्य की पुकार का उत्तर है उसके जीवन की वह वृत्ति है जो मातृत्व का चरम मार्ग है।"1

स्त्री जीवन का आधार ही उसका ममतामयी स्वरूप और वात्सल्य प्रेम है। वात्सल्य उसके जीवन का परम लक्ष्य है। वह वात्सल्य बच्चों के प्रति, बड़ों के प्रति और जीव-जन्तुओं के प्रति उत्सर्ग होता है। गृहलक्ष्मी का ममतामयी रूप प्राचीन काल से ही उदात्तमय है। प्रतिमा के रूप में भारतीय परिवार में स्त्री का सात्विक रूप है। उसकी आज्ञा, उसके विचार, उसके आदेश परिवार में सर्वोपरि माना जाता है।

मातृत्व की भावना स्त्री में शैशवकाल से ही देखी जाती है। वह छोटी बच्ची में एक ममतामयी माँ का मिनियेचर रूप रहता है। इसलिए ही बच्चियाँ गुड्डे-गुड़ियों के खेल में माँ-बाप बनकर गुड़ियों का ब्याह रचाती हैं। घर में खाना बनाती हैं, घर का काम संभालती हैं। अर्थात् मातृत्व की भावना बच्चियों में छुटपुट में ही विद्यमान होती है। यही भावना उसकी यौवनावस्था में माँ बनकर प्रबल होती है। - शास्त्रों में ऐसा माना गया है कि कोई भी स्त्री माँ बने बिना पूरी तरह तृप्त नहीं होती। स्त्री की पूर्णता व्यक्तित्व का विकास पूरा सौन्दर्य उसके ममतामयी स्वभाव में निहित है। इसलिए ही जब लड़की का ब्याह होता है, वह ससुराल जाती है वह अपने देवर और छोटी बहनों के लिए भाभी माँ होती है। मलयालम में भाभी को 'एडती अम्मा' कहा जाता है। ऐडती का अर्थ 'दीदी' है अर्थात् भाभी 'माँ'। कितना विराट है 'माँ' का अस्तित्व।

आज इस उत्तर आधुनिक युग में, जहाँ संबंध शिथिल हो रहे हैं, माता-पिता संतानों के लिए भार स्वरूप हो रहे हैं। सभी रिश्तों की मान्यताएँ बदल रही हैं। इन सबका कारण पश्चिमी संस्कृति का भयानक हस्तक्षेप है। आज का हर एक भारतीय इंसान पाश्चात्य संस्कृति की गिरफ्त में है। पाश्चात्य संस्कृति में माता-पिता को एक उम्र के बाद वृद्ध सदनों में छोड़ दिया जाता है। यही स्थिति आज भारत वर्ष में भर देखी जा रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज का आम भारतीय पाश्चात्य संस्कार के मक्कड़जाल में बुरी तरह फँस गया है। परिणाम स्वरूप हमारे संस्कार, मान्यताएँ दूषित होकर समाप्त हो रही हैं। संबंधों का स्थायित्व आम भारतीय परिवारों में देखा जा रहा है। समर्पण की भावना कहीं नहीं है। स्त्री जीवन का आधार उसके जननी रूप में है। इसलिए ही कहा गया है कि 'जननी जन्म भूमिश्चस्वर्गाधपि गरियसी' अर्थात् माता मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। सम्पूर्ण विश्व ब्रह्मांड की सूत्रधारिणी माता ही है, इसलिए ही हम धरणी, भूमि, देवी आदि नामों से पृथ्वी को संबोधित करते हैं। माँ के प्रति स्नेह, समर्पण, गौरव की बातें साहित्य की प्रमुख अंतर्धारा बन चुकी हैं विशेषकर कुछ श्रेष्ठ कहानीकारों की रचनाओं माँ

का स्नेह, वात्सल्य भाव का त्याग की भावना विस्तार से चित्रित है। इसलिए ही कुरान जैसे ग्रंथों में कहा गया है कि संसार का स्वर्ग माँ के चरणों में है। माँ के इस विराट स्वरूप को मलयालम की श्रेष्ठ लेखिका ने रूपायित किया है। मलयालम की एक सशक्त लेखिका है कमला सुरैया। कमला सूरैया की कहानियों से गुजरते वक्त हमें ऐसा आभास होता है कि उनकी कहानियाँ कहीं न कहीं हमारे जीवन से जुड़ी हैं अर्थात् उनकी कहानियाँ जीवन की सच्चाइयों से जुड़ी हुई हैं। 'पुनर्जीवित पक्षी' लेखिका की स्वयं की कहानी है। इस कहानी में भी माँ बनने की विचित्र अवस्थाओं का और अपनी सन्तान के प्रति ममता की भावना को दर्शाया है। लेखिका अपने तीसरे प्रसव के लिए अपने घर काषिक्कोड़ आती है। प्रसव पीड़ा में तड़पते समय प्रकृति की अवस्था का वर्णन करती हैं। बाहर ठंडी-ठंडी हवा प्रवाहित हो रही थी जो वर्षा ऋतु के आगमन का संकेत दे रही थी। लेखिका प्रसव पीड़ा को दूर करने के लिए 'गायत्री मंत्र' का जप कर रही थी। मंत्र जपते-जपते तीसरे पुत्र का जन्म होता है। ऐसा माना जाता है कि प्रसव काल स्त्री के लिए पुनर्जीवन होता है क्योंकि दर्दनाक स्थितियों को पार कर सृष्टिकर्म होता है। स्त्री सन्तान प्राप्ति की खुशी के लिए समस्त दर्दों को भूल जाती है। लेखिका का एक प्यारा सा मुन्ना होता है। वह अपने सारे दर्द भूल जाती है। उसे लगता है उसकी अवस्था 'फिनिक्स पक्षी' की तरह हो गई है जो अग्नि की ज्वाला में जलकर गल जाने के बावजूद भी पुनः वहीं कांति और नवजीवन को लेकर जागृत होती है। मैं भी वैसे ही जीवन की संघर्षपूर्ण अवस्थाओं से जागृत हो उठी थी। जीवन के नशे में मैं फिर उत्तम हो उठी।" इस कहानी का सच यह है कि ममता की भावना ही स्त्री के अन्दर 'फिनिक्स पक्षी' को जागृत करती है।

कमला सुरैया की कहानियों में 'ममता' की भावना सिर्फ माँ में ही नहीं, बल्कि नानी माँ, दादी माँ के द्वारा भी दर्शाया गया है। 'मेहमान' कहानी में एक दादी माँ का अपनी पोती के प्रति ममता की भावना, स्नेह प्यार को दिखाया गया है। एक बार कमलाक्षी के घर मेहमान के रूप में एक नवयुवक आता है उसके पिता से मिले। पिता की अनुपस्थिति में दादी मेहमान नवाजी निभाती है। दादी माँ नक्युवक को देखकर अपनी पोती कमलाक्षी से उसका रिश्ता जोड़ना चाहती है। वह अपनी पोती से कहती है, "क्या तुम्हें यही वरन गिला पहनने को। इस गंदे वस्त्र में तुम्हें कैस बाहर निकलने का मन हुआ। जाओ, वस्त्र बदली। लाल ब्लाउज पहन लो।"[8]

दादी सोचती है आगंतुक पोती को पसंद कर ले लेकिन आगंतुक के अंतिम वक्तव्य से वह बेहाल उठती है। वह आगंतुक से कहती है सुबह सोकर आराम से जाना। तब वह कहता है, "कल भोजन तक घर पहुँचना है। बड़े बेटे का जन्मदिन है।" किसका बेटा? "मेरा"

दादी ने सिर हिलाया, फिर कुछ कहे बिना दोनों ने दरवाजा बंद किया। कमलाक्षी ने चिमनी नीचे रख दी। जल्दी ही वह अपने शयन कक्ष की और गई। चटाई में लेटकर वह अपने जीवन की निराशाओं के बारे में सोचकर सिसककर रोने लगी। कमला सुरैया ने अपनी कहानियों में स्त्री के ममत्व को बड़ी खूबी के साथ उभारा है। स्त्री चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित, सम्पन्न हो या निर्धन ममता की भावना प्रायः सभी स्त्रियों के अन्दर होती है। उसकी जीवंत उदाहरण है 'उण्णी', 'उण्णी' का अर्थ है 'मुन्ना'। इस कहानी का मुन्ना एक अनाथ लड़का है जो एक बार लेखिका के घर आता है। लेखिका उसका नाम पूछती है। तब वह कहता है मेरा नाम उन्नि है, मेरा कोई भी नहीं है। लड़के की निस्सहायावस्था को देखकर उसके अन्दर ममता की भावना जागृत हो जाती है। वह कहती है 'अन्दर आओ'। कुछ खाकर जल्दी-जल्दी चले जाना वह अन्दर आकर कालीन पर बैठ जाता है। बच्चे की विनम्रता को देखकर वह उसे सोफे पर बैठने को कहती है। मेरे घर में गरीब सम्पन्न सब एक समान हैं।

वह एक गिलास ठंडा दूध और मिठाई लेकर बैठक में आती है और कहती है यह सब खाकर जाना होगा। आज मद्रास से हवाई जहाज मेरे पति अपने दौरे के बाद लौट रहे हैं। दो घंटे में यहाँ पहुँच जाएँगे। तुम्हें देखकर उन्हें गुस्सा आ जाएगा। वे तुम पर नाराज़ होंगे, नाराज तो मुझ पर भी होंगे और कहेंगे क्यों दूसरों के बच्चों को घर पर बुलाती हो।

यहाँ एक स्त्री की विवशता है एक और पति का नियंत्रण और अंकुश है, दूसरी और स्त्री सहज ममता की भावना। वह लड़के को जबरदस्ती घर से निकाल देती है ऐसा करने पर उसका माँ हृदय मन ही मन रोने लगता है। कमला सुरैया की उक्त कहानियों में मातृत्व की भावना को सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक ढंग से उभारा गया है। इन कहिानियों को पढ़ने के बाद हमें ऐसा लगता है कि उन कहानियों का यथार्थ कहीं न कहीं हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है। इन कहानियों के पात्र कहीं न कहीं हमारे चारों और कहीं घूम रहे हैं। ऐसा लगने का प्रमुख कारण कमला सुरैया की रचना धर्मिता है। भाषा में उनकी पकड़ अनूठी है। सीधी-सरल भाषा में मन की भावनाओं को स्पर्श करने, सहलाने व कुरेदने में कमला सुरैया सक्षम हैं। कहीं उनकी भाषा आक्रामक भी होती है। कहीं तीखी धार से वह अन्यान्य अत्याचार करने वालों पर प्रहार करती हैं।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. उपन्यासकार चतुरसेन शास्त्री के नारी पात्र डॉ. सुखदेव हंस, पृ. 25
2. विभ्रान्ति - कमला सुरैया पृ. 14
3. वही
4. बकरा - कमला सुरैया पृ. 21
5. अंधकार का दूसरा अध्याय कमला सुरैया पृ. 23
6. पुनर्जीवित पक्षी कमला सुरैया पृ. 49
7. मेहमान कमला सुरैया 7 पृ. 33
8. वही - पृ. 34